फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर **304** *1/–* *अक्टूबर* **2013**

निमन्त्रण

अक्टूबर में 27 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये।

छात्रों से संवाद जो हुआ नहीं

(जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में 17 सितम्बर 2013 को ***मारुति सुजुकी मानेसर*** *पर केन्द्रित एक चर्चा थी। इसे एक सुअवसर मान कर फरीदाबाद मजदूर समाचार द्वारा छात्रों से आदान-प्रदान के लिये कुछ बिन्दू तैयार किये गये थे। संयोग ऐसा रहा कि चर्चा में छात्र नहीं-से थे। विचार-विमर्श के लिये तैयार किये वह बिन्दू यहाँ दे रहे हैं।)*

इन 30-35 वर्षों के दौरान फैक्ट्री मजदूरों की अनेक गतिविधियों से हमारा वास्ता पड़ा है। इस सब में काफी कुछ ऐसा रहा है जिसे हम जोड़ नहीं पाये। कई अस्पष्टतायें बनी रही। इधर मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों की 4 जून 2011 से 18 जुलाई 2012 की हलचलों ने उत्साह और उत्तेजना के संग नये प्रश्न भी उभारे हैं जिनमें से कुछ को आज आपके साथ साँझा करना चाहते हैं। तीव्र से तीव्रतर हो रहा सामाजिक मन्थन व्यवहार के संग-संग विचारों में सृजना की, रचनात्मकता की आवश्यकता को अनिवार्यता की श्रेणी में ले आया है। हमें लगता है कि मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों ने कुछ विश्व-महत्व के प्रश्नों को उभारा है। आज चारों तरफ उमड़-घुमड़ रहे इन प्रश्नों की प्रस्तुति, इनकी व्याख्या, और इनके समाधान में योगदान के लिये हम आपको न्यौता दे रहे हैं, निमन्त्रण दे रहे हैं।

✶ 15 वर्ष एक फैक्ट्री के अन्दर व बाहर और 15 वर्ष से फैक्ट्री के बाहर सक्रिय एक साथी ने अनुभवों पर, व्यवहार पर मनन-मन्थन करते हुये मारुति सुजुकी मानेसर की गतिक्रिया के सन्दर्भ में कहा :

''मजदूरों ने फैक्ट्रियों पर कब्जे किये'' कहने की बजाय यह कहना कि ''मजदूरों ने फैक्ट्रियों पर से कम्पनियों के, सरकार के कब्जे हटाये'' *: 4 से 16 जून 2011 के दौरान मारुति सुजुकी मानेसर फैक्ट्री मजदूरों ने जो किया वह बहुत-ही महत्वपूर्ण है। फिर 7 अक्टूबर को* ***मारुति सुजुकी, सुजुकी इन्जन, सुजुकी कास्टिंग, सुजुकी मोटरसाइकिल, सत्यम ऑटो, बजाज मोटर, इन्ड्युरेन्स, हाईलैक्स, लुमैक्स, लुमैक्स डी. के, डिघानिया*** *फैक्ट्रियों में मजदूरों ने जो किया वह तो और भी महत्वपूर्ण है। यह कोई जनवादी अधिकार अथवा संवैधानिक अधिकार की बात नहीं थी। यह कोई हड़ताल भी नहीं थी। मजदूर समाचार में हम ने इसे मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर कब्जा करना कहा है। जून और अक्टूबर 2011 में आई.एम.टी. मानेसर में मजदूरों ने जो किया उसे ''मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों पर कब्जा'' कहना भी उसके महत्व को कम करके आँकना है।...... आई.एम.टी. मानेसर मजदूरों ने जो किया उसका महत्व ''कब्जे हटाओ'' की श्रृँखलाओं का प्रस्थान-बिन्दू बनने में है।.....*

साथी की यह बातें मजदूर समाचार के फरवरी 2012 अंक में हैं। कुछ पुराने तरीकों को अपर्याप्त पाना, कुछ को नाकारा पाना, और कुछ को नुकसानदायक पाना एक सामान्य बात है। कुछ पुराने तरीकों में परिवर्तन करना, कुछ को ठुकराना, और कुछ पुराने तरीकों का विरोध करना व्यवहार आवश्यक बना देता है। वर्षों से चल रहे व्यवहारिक तथा वैचारिक मन्थन का परिणाम हैं साथी की उपरोक्त बातें। क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें, नये तरीके ढूँढना-रचना, नये-नये ढँग को आजमाना की चल रही सतत प्रक्रिया को मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों ने नई गति दी है।

4 जून 2011 से 16 जून 2011 के 13 दिन और फिर 7 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2011 के दौरान फैक्ट्री पर से कम्पनी का, सरकार का कब्जा हटाने-कब्जा ढीला करने के दौरान का समय मारुति सुजुकी मानेसर के एक मजदूर के शब्दों में : *''7 से 14 अक्टूबर के दौरान मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर बहुत-ही बढिया समय रहा। न काम की टेन्शन। न आने-जाने का तनाव। न बस पकड़ने की चिन्ता। न खाना बनाने की टेन्शन। न खाना खाने की चिन्ता कि 7 बजे ही खाना है या 9 बजे ही खाना है। न इस बात की टेन्शन कि आज कौन-सा दिन है और कौन-सी तारीख चल रही है। निजी बातें बहुत होती थी। एक-दूसरे के इतने करीब कभी नहीं आये जितने इन 7 दिनों में आये।''*

कब्जे हर समय डाँवाडोल रहते हैं। कब्जों के विरोध में हर समय कई कदम उठ रहे होते हैं। समय-समय पर फैक्ट्री पर से कम्पनी का, सरकार का नियन्त्रण इस कदर कमजोर कर दिया जाता है कि उसे कब्जा हटाना कहना उचित होगा। फरीदाबाद में ***अमेटीप मशीन टूल्स*** के स्थाई मजदूरों द्वारा, गुड़गाँव में ***हीरो*** स्पेयर पार्ट्स फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों द्वारा, आई.एम.टी. मानेसर में ***नपिनो ऑटो एण्ड इलेक्ट्रोनिक्स*** फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों द्वारा मिल कर फैक्ट्री पर से कम्पनी का, सरकार का कब्जा हटाना। छात्रों द्वारा दुनिया में विद्यालय-महाविद्यालय-विश्वविद्यालय पर से सरकार का कब्जा हटाने के अनेक उदाहरण हैं। विश्व-भर में कब्जा ढीला करना, कब्जा हटाना आज एक सामान्य क्रिया बनने को अग्रसर है। कब्जा हटाना एक अवधारणात्मक छलाँग है, from occupy to deoccupy, from occupation to deoccupation is a conceptual leap. हमें लगता है कि हमारे वर्षों तक एकता बनाम तालमेल पर मन्थन का एक परिणाम है कब्जा हटाना की अवधारणा। एकमेव और एकमय, unique and together विचारणीय है। सब और सब का, all and everyone's नजर आ रहा है।

✶ दूसरी बात। जिस दौरान कब्जा ढीला अथवा हटा होता है वह समय भागीदारों के लिये जीवन्त समय होता है। अनेक कोणों से, अनेक लोगों द्वारा बिना डर के, बिना झिझक के, खूब फुर्सत में अनुभवों तथा विचारों का आदान-प्रदान होता है। आपस में अनेक प्रकार के जोड़ बनते हैं, तालमेल बढते हैं। और जो है, जो ढर्रा है उस पर प्रश्न-दर-प्रश्न उत्पन्न होते हैं। जीवन पर जीवन्त चर्चायें वर्तमान में तथा निकट भविष्य में आमूलचूल परिवर्तन की इच्छाओं को, आकांक्षाओं को खूब बढाती हैं। लोग माँगों के दायरे से बाहर निकल जाते हैं।

मारुति सुजुकी मानेसर की बात करें तो, साहबों के लिये ''मजदूर चाहते क्या हैं ?'' एक अबूझ पहेली बनी।

माँगें होती हैं तो रियायतों का कुछ अर्थ होता है। जहाँ इच्छा-आकांक्षा जीवन की हो, आनन्ददायक जीवन की हो वहाँ रियायतें अर्थहीन हैं। और यह है जो 18 जुलाई 2012 लाया। इस सन्दर्भ में बहुत संक्षेप में कुछ बातें देखिये :

30 से बहला-फुसला कर इस्तीफे लिखवाये। फिर जिन्हें रियायतें कहते हैं उन्हें कम्पनी स्वयं अपनी तरफ से देने लगी। रफ्तार घटाई — 45 सैकेण्ड में एक कार बनाने की जगह एक मिनट में एक कार बनाना निर्धारित किया। ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के पैसे बढाये। स्थाई मजदूरों को तीन वर्षीय दीर्घकालीन **(बाकी पेज तीन पर)**

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद — 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

फैक्ट्रियों में रिसावों की, तरेड़ों की एक झलक

न्यूटेक प्रिन्टर्स मजदूर : ''प्लॉट बी-240 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 75 स्थाई मजदूर और 75 कैजुअल वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, साप्ताहिक अवकाश नहीं, दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं — 30 रुपये प्रतिघण्टा देते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से किसी मजदूर को नहीं। स्थाई में 10,000 से कम तनखा वालों को 35 रुपये प्रतिघण्टा और 10 से 14 हजार वालों को 45 रुपये प्रतिघण्टा तथा कैजुअलों को 30 रुपये प्रतिघण्टा। महीने में दो रविवार को भी काम। शिफ्ट के बाद फिर रोक लेते हैं तब 36 घण्टे लगातार काम करना होता है और ऐसे में कम्पनी भोजन के लिये मात्र 35 रुपये देती हे। तनखा देरी से।''

गौरव इन्टरनेशनल श्रमिक : ''411 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूरों में से 10 ही रोल पर हैं। बाकी 90 मजदूर जिनमें 20 महिला हैं, उनकी ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं — तनखा 5000 रुपये। कैन्टीन में 22 रुपये में थाली, भोजन खराब। परसनल वाले ज्यादा ही गाली देते हैं। तनखा देरी से, 13 से 15 तारीख को। यहाँ ***गैप, वॉल मार्ट*** के लिये महिलाओं के वस्त्र बनते हैं।''

एस्कोर्ट्स कामगार : ''सुबह 4 के करीब उठना। ताजा होना। चाय मिली तो पी अन्यथा वैसे ही निकलना। पाँच-सात मिनट पैदल चल कर 5 किलोमीटर दूर स्टेशन के लिये पौने छह बजे की बस पकड़ना। कोसी स्टेशन पर पहली मथुरा शटल का समय 6 बजे का है पर 6.10-6.20 पहुँचती है। न्यू टाउन फरीदाबाद उतरना और ऑटो पकड़ कर एस्कोर्ट्स सैकेण्ड (फोर्ड-फार्मट्रैक) प्लान्ट पहुँचना। सुबह 8 की शिफ्ट। मथुरा, कोसी, होडल, पलवल से लोकल ट्रेनों में बहुत बड़ी सँख्या में मजदूर आते हैं। पहली मथुरा शटल में ही, एस्कोर्ट्स के ही सौ से ज्यादा टेम्परेरी मजदूर आते हैं। गाड़ियाँ लेट होने पर फैक्ट्री देरी से पहुँचना — गेट से वापस भेज देते हैं। गुस्से में नौकरी छोड़ देते हैं पर फिर वैसी ही नौकरी पकड़ते हैं। एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक फैक्ट्री में स्थाई मजदूर काफी हैं और कैजुअल वरकर भी बहुत हैं पर छह-सात ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सँख्या इन दोनों के जोड़ से ज्यादा है। पेन्ट शॉप में दिन की शिफ्ट में 15 स्थाई मजदूर, 15-20 कैजुअल वरकर, और ठेकेदार के जरिये रखे 100 मजदूर हैं। कैजुअलों के कम्पनी ब्रेक करती रहती है। ठेकेदारों के जरिये रखे 8-10 वर्ष से काम कर रहे हैं, परमानेन्ट करते ही नहीं। दिवाली के समय निकालने के लिये बहाने ढूँढने में मिठाई-विठाई वाली बात तो होती ही है, बड़ा पेंच फण्ड का है। तनखा से हर महीने ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर कोई स्लिप नहीं देते। छोड़ने पर फण्ड के बहुत कम पैसे मजदूरों को मिलते हैं। एक तो पी.एफ. संगठन ही है जो पेन्शन के नाम पर पैसे काट लेता है जबकि अस्थाई मजदूरों के लिये पेन्शन का कोई मतलब नहीं है। और फिर, मजदूर ने 11 महीने काम किया तो 5 महीने की फण्ड राशि ही जमा मिलती है, 4-6 महीनों के पैसे ठेकेदार कम्पनी खा जाती है। पैसे महीने पर देते हैं लेकिन कहते डेली वेज वरकर हैं। शब्दों के इस फेर का मतलब यह है कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को कोई छुट्टी नहीं देते। साँय 4½ छूटते हैं। स्टेशन के लिये पैदल चलते हैं, शॉर्ट कट से, आधा घण्टा लगता है। कोसी शटल का समय 5 बजे का है, 5½ तक आती है और 6½ की जगह 7-7½ पहुँचती है। स्टेशन से गाँव के लिये ऑटो लेते हैं और रात 8-8½ पहुँचते हैं। नहा-धो कर घण्टा-डेढ घण्टा लोगों के बीच उठना-बैठना। ड्युटी के बाद आ कर एकदम खाना नहीं खाते। भोजन 10 बजे करते हैं और सोने में 11 बज जाते हैं। नींद पूरी नहीं होती।''

ऑटोटेकर वरकर : ''प्लॉट 91 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, रविवार को भी। प्लास्टिक इंजेक्शन मोल्डिंग की 32 मशीन हैं और 15 दिन में शिफ्ट बदलती है तब दोनों शिफ्टों में 16-16 मशीनें चलती हैं। मई-जून-जुलाई-अगस्त महीनों में किये ओवर टाइम के पैसे आज 24 सितम्बर तक नहीं दिये हैं। अगस्त माह की तनखा भी आज 24 सितम्बर तक नहीं दी है। पैसे माँगने पर साहब धमकी देते हैं, कहते हैं कि पुलिस थाने में दे देंगे। यहाँ ***मारुति सुजुकी*** कारों तथा ***होण्डा*** व ***हीरो*** दुपहियों के हिस्से बनते हैं। दो सौ मजदूरों में 30 स्थाई हैं और बाकी को पाँच ठेकेदारों के जरिये रखा है।''

सुरक्षा कर्मी : ''प्लॉट 14 सैक्टर-44, गुड़गाँव में मुख्यालय और मानेसर में तहसील में शाखा कार्यालय वाली ***एस एल वी सेक्युरिटी*** के दिल्ली के इर्द-गिर्द तथा चण्डीगढ आदि में 50,000 गार्ड बताते हैं, आई एम टी में ही करीब 6,000 हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। रविवार को भी ड्युटी। कोई अवकाश नहीं। कागजों में 8 घण्टे की ड्युटी और रविवार की छुट्टी दिखाते हैं। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे काट कर 30-31 दिन 12 घण्टे रोज पर 6500 से 8500 रुपये देते हैं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी से बोर हो जाते हैं। रात की ड्युटी में तो नींद पूरी नहीं होती। अन्धेरे में जाते हैं और अन्धेरे में आते हैं, समाज में किसी से मुलाकात नहीं कर सकते। ऐसे में बीमार होने का डर बढ जाता है। रिलीवर नहीं आया तो ड्युटी 36 घण्टे की हो जाती है और तब भी रोटी के लिये पैसे नहीं देते तथा जिन 12 घण्टों को ओवर टाइम कहते हैं उनका भी भुगतान सिंगल रेट से। गार्डों के साथ बन्धुआ मजदूर वाला व्यवहार किया जाता है। फील्ड अफसर और एरिया अफसर बदतमीजी करते हैं। आफिस में कोई गार्ड अपनी समस्या ले कर जाता है तो अधिकारी उस पर ऐसे टूट पड़ते हैं जैसे वह कोई आतंकवादी हो।''

एस.डी. इंजीनियरिंग मजदूर : ''प्लॉट 177 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में दो-तीन स्थाई मजदूर और 15-20 ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर काम करते हैं। वैसे, वरकरों को कोई ठेकेदार नहीं लाता बल्कि कम्पनी का फोरमैन लाता है। पहले सब मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. थी पर इधर अप्रैल से जिन 100 को रखा है उनकी नहीं हैं। सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी रोज है और अगली सुगह 5 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। कोई छुट्टी नहीं — इधर बहुत समय बाद 15 अगस्त और जन्माष्टमी की छुट्टी दी। महीने में 250 घण्टे तक ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से, 10-15 घण्टे खा जाते हैं, और अगस्त में किये ओ टी के पैसे सितम्बर में नहीं बल्कि अक्टूबर में देंगे। इधर अगस्त की तनखा 10 सितम्बर को दी तब एक नया पेंच डाल दिया। कम्पनी 30 दिन का महीना कर तनखा देती थी पर अब 31 दिन का महीना बना करके हर मजदूर को महीने में 60 से 100 रुपये का नुकसान किया है। इसके विरोध में 11 सितम्बर को 40-50 मशीनें बन्द करके मजदूर एच आर विभाग गये। मजदूरों ने पूछना शुरू किया तब एच आर अधिकारी कुर्सी छोड़ कर भाग गया। दो-तीन घण्टे फैक्ट्री में काम बन्द रहा। यहाँ टूल रूम का ज्यादा काम है, ***मारुति सुजुकी, जे बी एम, एच1*** के फिक्सर बनते हैं।''

किरण उद्योग श्रमिक : ''प्लॉट 2 सैक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 100 मजदूर ***होण्डा*** तथा ***सुजुकी*** दुपहियों की व्हील असेम्बली करते हैं। कम्पनी की ओखला, बावल, बेंगलुरू, रूद्रपुर और यहाँ सैक्टर-3 में भी फैक्ट्रियाँ हैं। सुबह 7 से साँय 7 वाली शिफ्ट में रात 10-11 बजे तक रोक लेते हैं। सुबह 9 वाली शिफ्ट रात 9 तक है और अगली सुबह 7 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। महीने में 150 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। लगातार 22 घण्टे काम करवाती है तब भी कम्पनी भोजन नहीं देती। रात में एक कप चाय तक नहीं देते। चार महीने से फ्रिज खराब है, गर्मियों में गरम पानी पीओ। शौचालय बहुत-ही गन्दे, बस स्टैण्ड जैसे।''

सरफेसर एण्ड फिनिशिंग कामगार : ''प्लॉट 118 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 6½ से साँय 7 की शिफ्ट है और रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा देरी से, जुलाई की 25 अगस्त को दी, अगस्त की आज 12 सितम्बर तक नहीं दी है, और तनखा माँगने पर गाली देते हैं।''

ऋचा वरकर : ''232 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 23-24 सितम्बर को आधे मजदूरी को 4-5,000 रुपये बोनस दिया। ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूरों को बोनस नहीं दिया।''

इण्डो ऑटोटेक मजदूर : '' प्लॉट 132-133 सैक्टर-8, आई.एम.टी. मानेसर स्थित कम्पनी की थर्ड यूनिट में 50 स्थाई मजदूर और 850 अस्थाई मजदूर ***होण्डा*** दुपहियों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। सुबह 8 से 4½ तथा साँय 6½ से अगली सुबह 5 तक की दो शिफ्ट हैं। **(बाकी पेज चार पर)**

छात्रों से संवाद जो हुआ नहीं

.......(पेज एक का शेष)

समझौते में तनखा में उल्लेखनीय वृद्धि का आश्वासन दिया। बसों की सँख्या बढाई। माता-पिता को स्वास्थ्य बीमा में शामिल किया। छुट्टियाँ बढाई। एक-दो अनुपस्थिति पर भारी राशि काटना बन्द किया। ड्युटी बाद रोकना बन्द किया, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को रात की पाली में 1½ घण्टे अतिरिक्त रोकना बन्द किया। दूसरी यूनियन का रजिस्ट्रेशन हुआ-करवाया। दूसरी यूनियन को recognised यूनियन की मान्यता दी। मजदूरों को निवास के लिये बड़ी सँख्या में मकान बना कर देने का आश्वासन। दीर्घकालीन समझौते के लिये यूनियन का माँग-पत्र और उस पर वार्तायें।

रियायतों के दायरे में देखें तों उपरोक्त रियायतें उल्लेखनीय लगेंगी। जबकि, फरवरी-मार्च 2012 से ही मजदूरों को लगने लगा था कि इतना कुछ करने के बाद भी कुछ नहीं बदला था। मारुति सुजुकी मानेसर मजदूर रियायतों की बातों को मैनेजमेन्ट की भाषा बोलना कहते। मजदूर तो मजदूर ही रहे थे — बदला क्या था? इसलिये 18 जुलाई को मजदूर होने के खिलाफ मजदूरों ने विद्रोह किया। मजदूर बनाये रखने के दो प्रतीकः मैनेजर और फैक्ट्री बिल्डिंग मजदूरों के आक्रमण के निशाने बने। बीस-पचास मजदूरों का कोई गुट यह नहीं कर रहा था। नये-पुराने, स्थाई-अस्थाई हजारों मजदूर इस विद्रोह में शामिल थे।

मजदूरों ने मजदूरी-प्रथा को चुनौती दी। आगे क्या का प्रश्न आज जीवन्त सवाल बना है। यह मजदूरों के बीच चर्चा का विषय बना है। मारुति सुजुकी मानेसर के एक मजदूर ने कहा, "18 जुलाई वाली बात पूरे आई.एम.टी. में होती तो सच में एक बात होती।"

मजदूरी-प्रथा को चुनौती के इस दौर में इस से आगे क्या, इसकी जगह क्या वाले सवाल आपके लिये भी चुनौती हैं और आपके योगदान की समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

✶ आज के फैक्ट्री मजदूर हालात को कैसे पढ रहे हैं, स्थितियों को कैसे पुनः पढ रहे हैं, नये सिरे से कैसी व्याख्यायें कर रहे हैं? सत्ता को चुनौतियों के लिये यह बहुत महत्व की हैं। संक्षेप में दो उदाहरण प्रस्तुत हैं:

1. 14 अक्टूबर 2011 को मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर 1600 के करीब स्थाई मजदूर, ट्रेनी और अप्रेन्टिस थे। थानेदार की तलाशी के बाद बन्दूक-धारियों से घिरा डी.सी. अचानक 20-25 अधिकारियों के संग आया। वहाँ उपस्थित एक मजदूर का विवरण सुनिये। *"डी.सी. थोड़ा घूमा और फिर एक जगह खड़ा हो कर बोलने लगा — माइक नहीं था, मजदूरों ने माइक दिया। शुरू में शुद्ध नेता की तरह भाषण: अच्छे मजदूर हो, पढे-लिखे हो, 5 वर्ष से बहुत अच्छा काम कर रहे हो, इतना उत्पादन किया, इतना सरकार को टैक्स, औरों से ज्यादा तनखा है, मैनेजमेन्ट अच्छी है, कुछ लोगों के बहकावे में आ गये हो, फैक्ट्री पर अवैध कब्जा किये हो, उच्च न्यायालय के आदेश का पालन करो, फैक्ट्री खाली करने का आदेश मानना ही पड़ेगा, इसके अलावा कोई चारा नहीं है, कानून से खिलवाड़ हम नही करने देंगे,* ***रीको ऑटो*** *मजदूरों के भटकने से आर्डर खत्म हो गये, मारुति सुजुकी बन्द हो जायेगी तो तुम्हारी नौकरी तो जायेगी पर सरकार घाटा क्यों झेले।*

मजदूर इस आधे घण्टे डी.सी. की बातें ध्यान से सुन रहे थे। फिर डी.सी. ने कहानी सुनानी शुरू की — कहानी जो मारुति सुजकी मैनेजमेन्ट सुनाती रहती है: कछुये और खरगोश वाली बढा कर। दूसरी बार खरगोश सोया नहीं, पहले पहुँचा। तीसरी बार कछुये ने रास्ते में पानी भी लिया, कछुआ जीता। चौथी बार समतल व ऊबड़-खाबड़ रास्ता और पानी भी, तब कभी कछुआ खरगोश की पीठ पर और कभी खरगोश कछुये की पीठ पर। टीम वर्क — मजदूर और मैनेजमेन्ट मिल कर चलें। डी.सी. के कहानी शुरू करते ही मजदूर पसर गये थे, सो गये थे, आपस में बातें करने लगे थे। अन्त में डी.सी. बोला कि अतिशीघ्र मैनेजमेन्ट से समझौता वार्तायें करवायेंगे, अभी तुम आदेश मानो। एक और अधिकारी ने फिर कानून की बात की: अवैध कब्जा किया है, फैक्ट्री खाली करनी पड़ेगी। और, डी.सी. चल पड़ा तो माइक पर एक मजदूर बोला, 'हम ने आपकी सारी बातें सुनी। आप अब हमारी भी सुनो।' डी.सी. रुका और एक के बाद दूसरा सवाल पूछा जाने लगा तो डी.सी. चलने लगा। तब मजदूरों ने नारे लगाने शुरू किये और तेज आवाज, बहुत तेज आवाज हुई तब डी.सी. तथा अन्य अधिकारी लगभग भागते-से फैक्ट्री से बाहर गये।"

दूसरा उदाहरण : *ठेकेदार के जरिये रखा गया मारुति सुजुकी मजदूर 13 जनवरी 2012 को बी-शिफ्ट में ड्युटी पर था जब* ***अलाइड निप्पोन*** *के एक मजदूर ने फोन पर बताया कि फैक्ट्री में लगी आग से एक मजदूर जल गया है। कम्पनी ने उसे अलियर में सपना नर्सिंग होम में भर्ती किया है और डॉक्टर से कहा है कि शाम को उसकी छुट्टी कर देना। दोनों पैर जाँघ से नीचे तक जले हैं..... मारुति सुजुकी मजदूर ने अलाइड निप्पोन मजदूर से जले मजदूर को नर्सिंग होम में ही रखने को कहा। शनिवार, 14 जनवरी को सुबह मारुति सुजुकी में ठेकेदारों के जरिये रखे 10-15 मजदूर नर्सिंग होम गये। डॉक्टर ने जले मजदूर की छुट्टी करने की बात की तो कहा कि इलाज करो, कम्पनी अगर पैसे नहीं देगी तो हम देंगे। जले मजदूर को देखने कम्पनी से शनिवार व रविवार को कोई नहीं आया — साथी मजदूर अवश्य आते रहे। रविवार को साँय अलाइड निप्पोन के प्रोडक्शन मैनेजर को फोन किया तो साहब सफेद झूठ बोला कि उसे पता ही नहीं है कि कोई मजदूर जला है। अलाइड निप्पोन के जले मजदूर से मिलने गये मारुति सुजुकी के मजदूरों से सोमवार को सुबह डॉक्टर बोला कि पैसे दो नहीं तो ई.एस.आई. भेजेंगे। साथियों को फोन किये और आधे घण्टे में मारुति सुजुकी में प्रेस शॉप, असेम्बली, पेन्ट शॉप, वैल्ड शॉप विभागों के तथा सुजुकी पावरट्रेन के अलियर व ढाणा में रह रहे ठेकेदारों के जरिये रखे 70-80 मजदूर नर्सिंग होम पर एकत्र हो गये। वहाँ से अलाइड निप्पोन फैक्ट्री पहुँचे। फैक्ट्री मैनेजर ने जले हुये मजदूर के बारे में कोई भी बात करने से इनकार कर दिया। मजदूरों ने यह भी कहा कि डरने की आवश्यकता नहीं है, आप गेट के दूसरी तरफ से ही बात करना, पर साहब नहीं माने। मारुति सुजुकी और सुजकी पावरट्रेन में ठेकेदारों के जरिये रखे 70-80 मजदूरों को अलाइड निप्पोन गेट पर आधा घण्टा हो गया तब जले मजदूर को भर्ती करने वाली ठेकेदार कम्पनी का सुपरवाइजर आया। बातचीत में तय हुआ कि नर्सिंग होम का खर्चा और उपचार के दौरान बैठे दिनों के पैसे मजदूर को दिये जायेंगे तथा उसके घरवालों को फोन करके बुलाया जायेगा। सोमवार दोपहर को जले मजदूर को आई.एम.टी. में सैक्टर-3 स्थित ई.एस.आई. अस्पताल ले गये। आपातकाल में भर्ती कर लिया और ई.एस.आई. कार्ड माँगा — नहीं था। सुपरवाइजर ने दो घण्टे का समय डॉक्टर से माँगा और 12.12.2010 से काम कर रहे मजदूर का ई.एस.आई. कार्ड 16.1.2012 को बनवाया गया। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भरी। जले मजदूर के पिता गाँव से आ गये हैं। आज 24 जनवरी तक वह ई.एस.आई. अस्पताल में भर्ती है। अलाइड निप्पोन फैक्ट्री में जला मजदूर दुर्गेश बास गाँव में किराये पर रहता है। मारुति सुजुकी और सुजुकी पावरट्रेन के इस सन्दर्भ में कदम उठाने वाले मजदूर अलियर तथा ढाणा में किराये पर रहते हैं और उनमें से किसी का भी दुर्गेश से कोई परिचय नहीं था। छह महीने में दो बार फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा हटाने ने मारुति सुजुकी मजदूरों में नई भावनाओं और विचारों को उभारा है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर रखवाने के लिये स्थाई मजदूरों तथा टेक्निकल ट्रेनियों ने 7 से 14 अक्टूबर तक फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा हटाया और ....और साथ में आई.एम.टी. में 11 फैक्ट्रियों पर से मजदूरों ने कम्पनियों के कब्जे हटाये। इसने रंगत ही बदल दी है। जान-पहचान जहाँ झमेले लिये है वहाँ अनजाने भी अपने हैं का विचार-व्यवहार खूब कमाल करेगा।*

✶ आइये एक अन्य पहलू लें। मारुति सुजकी के मैनेजिंग डायरेक्टर के अगस्त 2012 के speaking order को देखें। यह 18 जुलाई की दहशत है जो उक्त speaking order में छाई हुई है। पर अधिक महत्वपूर्ण है हिंसा के लिये भड़काना और हिंसा में हिस्सा लेने की बात। साहब ने 546 मजदूरों को अलग-अलग से पत्र लिखे। और, प्रत्येक पत्र में कहा है कि आपने अन्य को हिंसा के लिये भड़काया और आपने स्वयं हिंसा में भाग लिया। साहब लोग हर मजदूर को instigator और participant कह रहे हैं। यानी, कम्पनी प्रत्येक मजदूर को उसका कब्जा ढीला करने वाले के तौर पर देखती है। हर मजदूर अस्थिरता उत्पन्न करने **(बाकी पेज चार पर)**

जुड़ने–जोड़ने के लिये

मजदूर हितैषी मजदूर

लक्ष्य है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें , सहयोगी बनें

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का। ..... भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। ..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. ....हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है। 4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर... ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।...

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन के सदस्य बनें। ''समय नहीं है'' के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद– 121001 है।

फोन : 0129–6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालत करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब ''मजदूर मोर्चा'' के सम्पादक हैं।

छात्रों से संवाद जो हुआ नहीं.... *(पेज तीन का शेष)*

वाला एक बिन्दु है। नेता-नेतृत्व और मजदूर वाली जो भाषा थी वह नाकारा हो गई है, leader and led language has become completely obsolete.

आज फैक्ट्री मजदूरों में एक प्रवृति बहुत गहरे पैठ गई है : मजदूर सुनते सब की हैं पर करते अपने मन की हैं। समझानेवालों और समझनेवालों के पीड़ादायक विभाजन का विलोप हमारी आँखों के सामने हो रहा है। प्रवचनों की, preach-teach की बेड़ियों से मुक्त होने का समय आपके सम्मुख है। आदान-प्रदान की सुखद राहें आज खुली हुई हैं।

मानसिक श्रम तथा शारिरिक श्रम के विभाजन बहुत धुँधले हो गये हैं। ऐसे में मजदूरों के बारे में पुरानी और प्रचलित धारणाओं के पार जाना आवश्यक है अगर आप नये समाज की रचना में सकारात्मक योगदान देना चाहते हैं।

✶ इस चर्चा को समेटने की बजाय और खोलने के लिये आइये आज के फैक्ट्री मजदूरों की एक झलक देखें। बीस-बाइस वर्ष आयु के मजदूर जिनका दस-बारह कार्यस्थलों पर काम करने का अनुभव है यह सामान्य-सा बन गया है। अनेकों स्थानों के, अनेकों प्रकार के अनुभवों तथा विचारों का आदान-प्रदान तेजी से और व्यापक स्तर पर हो रहा है, वैश्विक स्तर पर हो रहा है। एक युवा मजदूर ***एस्सार स्टील,*** हजीरा, गुजरात से ***गेल,*** भरूच, गुजरात जाता है और वहाँ से छत्तीसगढ में रायगढ स्थित ***जिन्दल स्टील एण्ड पावर*** जाता है। छत्तीसगढ से वह मजदूर कर्नाटक में बेल्लारी स्थित ***जे एस डब्लू*** प्लान्ट जाता है। फिर वह मजदूर ओडिशा में जाजपुर स्थित ***जिन्दल स्टेनलैस स्टील*** प्लान्ट गया और फिर गुजरात में जामनगर स्थित ***रिलायन्स रिफाइनरी*** पहुँचा। बातचीत हुई तब वह युवा मजदूर नोएडा में काम कर रहा था।

आज के मजदूरों के एक उदाहरण के तौर पर मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों की कुछ चर्चा कर चुके हैं। दूसरे उदाहरण के लिये ***नोएडा*** और ***ओखला*** के मजदूरों को लेते हैं। नोएडा में मजदूरों ने 20 फरवरी 2013 को जो किया उसकी बहुत कम जानकारी हमें है पर नोएडा मजदूरों की धमक-धमक काफी दूर तक सुनी गई। नपिनो, होण्डा, मारुति सुजुकी आदि-आदि में नोएडा मजदूरों की हलचल से कम्पनियाँ इतनी डरी कि उन्होंने 21 फरवरी को फैक्ट्रियाँ बन्द रखी। ओखला में 21 फरवरी 2013 को फैक्ट्री मजदूरों ने जो किया उसका कुछ विवरण मजदूर समाचार में देख सकते हैं। यहाँ यथास्थिति के पक्ष में प्रयासरत एक प्रचारक विद्वान के विचारों को देखिये : ''गुस्से में मजदूरों का हिंसा करना समझ में आता है। रियायतें दे कर ऐसी हिंसा को काबू में किया जा सकता है। नोएडा और ओखला में मजदूर गुस्से में नहीं दिख रहे थे। हिंसा में मजदूरों को आनन्द आ रहा था। यह बहुत-ही चिन्ता की बात है।''

मित्रो, मजदूरों की पिटे हुये, थके-हारे हुये, बेचारे की छवि आपके लिये भी बेड़ी है। फरीदाबाद, ओखला, गुड़गाँव तथा आई.एम.टी. मानेसर के फैक्ट्री मजदूरों के बीच अपने सीमित अनुभवों के आधार पर भी हम कह सकते हैं कि चीजें धधक रही हैं। कानून-विधान-संविधान को आज मजदूर कागज के टुकड़ों से अधिक महत्व नहीं देते। मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों ने ही छह महीने में ही बाध्यकारी धाराओं के तहत किये गये तीन समझौतों को व्यवहार में कागज के टुकड़ों के तौर पर लिया। हलचलों से भरपूर और उथल-पुथल के वाहक मजदूरों की एक नई छवि चुनौती है। चुनौती स्वीकार कीजिये। विश्व को नये सिरे से ढालने के लिये नये सिरे से सोचने की चुनौती हम सब के सम्मुख है। विश्व घटनाक्रम जो हम देख रहे हैं उसमें मारुति सुजुकी मानेसर में 18 जुलाई 2012 एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। यह बिन्दु विश्व में आसन्न आमूलचूल परिवर्तन का एक आभास देता है। आज की व्यवहारिकता के खिलाफ हम सब का अव्यवहारिक, अधिकाधिक अव्यवहारिक बनने का समय है यह। ऐसे वक्त के लिये कहा भी गया है : audacity, more audacity, and still more audacity. ■

✶ ***दिल्ली*** सरकार द्वारा पहली अक्टूबर 2013 से निर्धारित न्यूनतम वेतन अकुशल श्रमिकः 8086 रुपये (8 घण्टे के 311 रुपये) ; अर्ध-कुशल श्रमिक : 8918 रुपये (8 घण्टे के 343 रुपये) ; कुशल श्रमिकः 9802 रुपये (8 घण्टे के 377 रुपये)।
✶ 1.7.2013 से ***हरियाणा*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल मजदूर : 5342 रुपये (8 घण्टे के 205 रुपये) ; उच्च कुशल मजदूर : 5992 रुपये (8 घण्टे के 230 रुपये)।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

फैक्ट्रियों में रिसावों...(पेज दो का शेष) ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल वरकरों तथा ठेकेदार के जरिये रखे 200 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।''

ताज फोरजिंग श्रमिक : ''प्लॉट 42 सैक्टर-27 ए, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 30 स्थाई मजदूर, 200 कैजुअल वरकर, और ठेकेदार के जरिये रखे 30 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ***सोनालिका*** व ***इन्टरनेशनल*** ट्रैक्टरों और रेलवे के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।''

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**